Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

हिंदी में रोजगार के अवसर

प्रा. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात,
आदर्श कॉलेज विटा,

वर्तमान युग में हिंदी भाषा बोलनेवाले लोग दिन-ब-दिन बढ रहे हैं। विश्व में हिंदी भाषा का प्रसार बढता जा रहा है। पुरे विश्व में विराट के रूप में भारत की पहचान बढ गई है। भारत द्वितीय नंबरपर बढती आबादी और विराट जनतंत्रवाला देश है। बोलनेवाले और समझने वालों की दृष्टि से हिंदी भाषा पूरे विश्व में दूसरे स्थान पर है। आज हिंदी भाषा पूरे विश्व के व्यापार की भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही है। बाजारवाद और वैश्वीकरण के कारण समस्त विश्व सिमट-सा गया है। दुनिया की दूरियाँ मिटती जा रही है। प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश ज्ञान प्राप्त करना था लेकिन आज शिक्षा की ओर देखने का नजरिया बदल गया है। आज रोजी-रोटी के लिए शिक्षा और ज्ञान प्राप्त किया जाता है। आज भाषा सिखने पर रोजगार प्राप्त किया जा रहा है। इसमें हिंदी भाषा पूरे विश्व में फैलने के कारण हिंदी भाषा ----- अनेक क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर रहा है। हिंदी भाषा में उपाधी पाकर और सिर्फ हिंदी भाषा बोलनेवाले और समझनेवाले भी रोजगार प्राप्त कर रहें है। विश्व का व्यापार विचार-विनिमय पर चलता है। वही विचार-विनिमय हिंदी भाषा में होने के कारण महानगरों से लेकर देहातों-गाँवों तक के लोगों के पास व्यापारी पहुँच चुके है। दुनिया में अनेक प्रकार के शोध कार्य शुरू है। अनेक प्रकार के तकनिक की खोज शुरू है। नई-नई वस्तुएँ बन रहीं है। इन सभी वस्तुओं का प्रचार और प्रसार करने के लिए हिंदी भाषी सेल्समन की आवश्यकता बडी मात्रा में है। इसी क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाएँ निर्माण हुई है। आज हिंदी विषय लेकर अध्ययन कर रहे छात्रों के लिए अनेक प्रकार की नौकरियाँ और व्यापार प्राप्त हो रहे है। कोई भी छात्र हिंदी भाषा का सामान्य या विशेष स्तर पर अध्ययन करेगा तो उसे निश्चित रूप से रोजगार मिल सकता है। इसके लिए आवश्यक है छात्रों में आत्मविश्वास, लगन मेहनत और कौशल्य प्राप्त करने की क्षमता निहीत हो। आज भारत देश के साथ पूरे विश्व में हिंदी के छात्रों को रोजगार मिलने के अवसर लगातार निर्माण हो रहे है।

वर्तमान युग में पूरी दुनिया के लिए भारत सबसे बडे बाजार के रूप में सामने आ रहा है। विदेशी कंपनीयाँ अपनी वस्तुओं को भारतीय बाजार में बेचने के लिए रहीं है। उन कंपनीयों के द्वारा निर्मित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार बढाने के लिए और बेचने के लिए रोचक और असरदार विज्ञापनों की आवश्यकता होती है। ''वर्तमान समय में विज्ञापन की दुनिया ने हमारे समाज में जडे जमा ली है। आज विज्ञापन से अपने आप को अलग रखना असंभव है।''[9] भारतीय व्यक्ति हिंदी भाषा का प्रगत एवं उन्नत ज्ञान ग्रहण करेगा और मांग के अनुसार रोचक और असरदार विज्ञापन लिखेगा तो अधिक मात्रा में रोजगार प्राप्त कर रूपये कमाएँगा। इन कंपनीयों को विज्ञापन लेखक के साथ अच्छे प्रबंधक की भी जरूरत होती है। जिस देश की कंपनी है उस देश की भाषा और हिंदी भाषा जाननेवाले व्यक्ति को प्रबंधक की नौकरी मिल सकती है। ज्यो व्यक्ति मालिक, कामगार और ग्राहकों के बीच बराबर संबंध स्थापित कर सके ऐसे प्रबंधक की आवश्यकता कंपनी को होती है। इससे कंपनी को अधिक लाभ होता है। कंपनी ऐसे प्रबंधक को भारी-भरकम वेतन देकर नियुक्त करती है। छात्रों ने हिंदी भाषा के ज्ञान के साथ-साथ विविध तकनिकी ज्ञान से परीपूर्ण होना चाहिए। ऐसे युवकों को तुरंत नौकरी अथवा रोजगार प्राप्त होता है। भारत के प्रधानमंत्री भी इसी (स्किल डवलपमेंट) कौशल्य विकास पर जोर दे रहें है। जिसके कारण भारतीय युवक देश-विदेश में नौकरीयाँ रोजगार और व्यापार के क्षेत्र में कामयाब हो जाएँगे। भारतीय युवक अपने विकास के साथ-साथ देश के विकास में भी भागीदार बने।

साहित्य क्षेत्र में हिंदी भाषा का अध्ययन करेनवाले युवकों को अनेक तरह के रोजगार प्राप्त हुए है। कोई छात्र हिंदी भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करता है। रचनात्मक कौशल्य प्राप्त करता है। ऐसा छात्र कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक हास्य-व्यंग, निबंध, जीवनी और आत्मकथा आदि में से कोई भी विधा का साहित्य लिखकर रोजगार प्राप्त कर सकता है। रोजगार के साथ-साथ उसे प्रसिद्धी भी मिल सकती है। फिल्म दुनिया के लिए, टी.वी. सिरीयल के लिए, नाट्य मंडली के लिए साहित्य

के विविध विधाओं के रचनात्मक लेखन की आवश्यकता होती है। उनकी जरूरत हिंदी लेखक ही पूरी कर सकता है। उनके साथ अभिनेता, अभिनेत्री, संवाद लेखक, गीतकार आदि के रूप में युवक रोजगार पा सकते है। हिंदी फिल्मों के जरिए अनेक लोगों को संपत्ति के साथ सम्मान भी मिला है। उनमें पटकथा लेखक- प्रेमचंद, कमलेश्वर, गीतलेखक के रूप में कवि हरिवंशराय बच्चन, गीतकार के रूप में जावेद अख्तर, गुलजार, अभिनेता के रूपमें अमिताभ से लेकर रितेश देशमुख आदि।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी के छात्रों तथा अध्येताओं को रोजगार के काफी अवसर उपलब्ध है। पूरी दुनिया में शिक्षा के नए-नए केंद्र खुल चुके हैं। इसमें देश-विदेश की कई भाषाओं का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। ''विदेशों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण बहुत लोकप्रिय होता जा रहा है। युरोपियन देशों जैसे अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, पोलैंड, बल्गारिया समेत ऐसे चालीस देश और लगभग १६० विश्वविद्यालय है जहाँ हिंदी एक विषय के रूप में पढाई जाती है।''[२] हिंदी भाषा का अध्ययन अध्यापन विदेशी कई विश्वविद्यालयों में हो रहा है। उसी तरह भारत में भी अनेक विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषाओं का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। ऐसे विश्वविद्यालयों में हिंदी के छात्रों को अध्यापन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। विदेशी विश्वविद्यालय और अनेक कंपनियाँ भारत में आ चुकी है और वे भारतीय छात्रों को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। इन क्षेत्रों में हिंदी भाषा के अच्छे ज्ञाता और जिस देश का विश्वविद्यालय या कंपनी है उस देश की भाषा को प्रभावी रूप से जाननेवाले व्यक्ति की उन्हें आवश्यकता है। इसके साथ ही अपने गाँव या तहसिल में भी एम.ए.बी. एड. सेट, नेट और पीएच.डी. करनेवालों को अध्यापक की नौकरी मिल सकती है। इसके साथ ही और एक नया रोजगार निर्माण हुआ है- एज्युकेशनल कौन्सलर। एज्युकेशनल कौन्सलर का प्रशिक्षण लेकर वह नर्सरी से लेकर उच्च शिक्षा तक के छात्रों को कौन्सलींग कर सकता है। वह अनेक प्रकार के एज्युकेशनल प्रोडक्ट बेच सकता है और निरंतर रोजगार प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष :

हिंदी भाषा अध्येता के लिए भूमंडलीकरण के कारण रोजगार और व्यापार की असीम संभावनाएं उपलब्ध हुई है क्योंकि दुनिया का सबसे बडा बाजार हमारे पास है। हिंदी भाषा और ज्ञान के आधार पर हम राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोजगार प्राप्त कर सकते है। विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा का अध्यापन किया जाने लगा है। इसलिए पूरे विश्व में हिंदी अध्यापकों की आवश्यकता है। अतः हिंदी भाषा रोजगारपूरक भाषा बन चुकी है।

संदर्भ :

१. डॉ. नरेश भाटिया, आधुनिक विज्ञापन और जनसंपर्क पृ. ८६
२. शब्द-ब्रह्म - १७ डिसेंबर, २०१२ पृ. ३५

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com